بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 22 नवम्बर 2024, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

सुलह-ए-हुदैबियः के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान तथा दुनिया की स्थिति के सम्बन्ध में दुआओं की प्रेरणा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 22.11.24

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हुदैबियः (मुसलमानों और काफ़िरों के बीच होने वाली सन्धि जिसे क़ुरआन ने मोमिनों की विजय फ़रमाया) के बारे में बयान हो रहा है। इस बारे में बुदेल बिन वर्का खुज़ाई और क़ुरैश के अन्य सन्देश लाने वालों का रसूल करीम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आने का भी वर्णन मिलता है। इसकी विस्तृत चर्चा में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी इस प्रकार बयान करते हैं कि जब आँहज़रत स. हुदैबिया की वादी में पहुँच कर डेरे दाल चुके तो खुज़ाआ नामक क़बीले का एक प्रसिद्ध रईस बुदैल बिन वरक़ा नाम का, अपने कुछ साथियों सहित आँहज़रत स. से मिलने के लिए आया तथा उसने आप स. से निवेदन किया कि मक्का के रईस युद्ध के लिए तय्यार खड़े हैं और वे कभी भी आप स. को मक्का में दाख़िल नहीं होने देंगे। आप स. ने फ़रमाया कि हम तो युद्ध करने के लिए नहीं आए बल्कि केवल उमरा करने की नीयत से आए हैं तथा दुःख की बात है कि बावजूद इसके कि क़ुरैशे मक्का को युद्ध की आग ने जला जला कर राख कर रखा है किन्तु फिर भी ये लोग बाज़ नहीं आते और मैं तो इन लोगों के साथ इस समझौते के लिए भी तय्यार हूँ कि वे मेरे ख़िलाफ़ युद्ध बंद करके मुझे दूसरे लोगों के लिए आज़ाद छोड़ दें। परन्तु यदि उन्होंने मेरे इस सुझाव को भी रद्द कर दिया और हर प्रकार से युद्ध की आग को भड़काए रखा तो मुझे भी उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी

जान है कि फिर मैं भी इस मुक़ाबले से उस समय तक पीछे नहीं हटूंगा कि या तो मेरे प्राण इस मार्ग में बलिदान हो जाएँ और या ख़ुदा मुझे विजय प्रदान करे। यदि मैं इनके मुक़ाबले में आकर मिट गया तो कथा समपन्न, परन्तु यदि ख़ुदा ने मुझे विजय प्रदान की और मेरे लाए हुए दीन को ग़लबः मिल गया तो फिर मक्का वालों को भी ईमान ले आने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

बुदैल पर आप स. के इस सहानुभूति से ओतप्रोत वक्तव्य का बड़ा गहरा प्रभाव हुआ और उसने मक्का पहुँच कर क़ुरैश को आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सन्धि के प्रस्ताव से अवगत किया। इस पर उर्वा बिन मसूद नामक एक व्यक्ति, जो सकीफ़ नामक क़बीले का एक प्रतिष्टित रईस था, ने कहा कि आपको चाहिए कि उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लें और मुझे अनुमति दें कि मैं आपकी ओर से मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास जाकर और अधिक चर्चा करूँ। उसने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ी को मक्का वालों से डराने की कोशिश की, किन्तु जब उर्वा ने देखा कि जब भी रसूलुल्लाह स. थूकते तो सहाबा रज़ी उसको हाथ पर लेते और फिर उसको अपने चेहरे और छाती पर मलते। जब आप स. सहाबा रज़ी को किसी चीज़ का आदेश देते तो सहाबा रज़ी तुरन्त उसको कर डालते, जब आप स. वज़ू करते तो सहाबा वज़ू के पानी को प्राप्त करने के लिए टूट पड़ते, किसी बाल को भी नीचे नहीं गिरने देते और आप स. के सामने अपनी आवाज़ को नीचा रखते थे और आप स. के सम्मान के कारण आप स. को तिरछी निगाहों से नहीं देखते थे। तो वह क़ुरैश के पास आया और कहने लगा कि ऐ मेरे लोगो, मैं मध्यस्त बनकर राजाओं के दरबारों में, कैसर ओ किसरा और नजाशी के दरबार में गया हूँ, अल्लाह की क़सम, मैंने कभी कोई ऐसा राजा नहीं देखा जिसका ऐसा आज्ञा पालन किया जाए जैसा मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) आज्ञा पालन उसके सहाबियों रज़ी में होता है। हुज़ूर अनवर ने समीक्षा करते हुए फ़रमाया कि कहाँ तो वह आया था आँहज़रत को काफ़िरों से डराने के लिए और कहाँ जब ये नज़ारे देखे तो प्रभावित होकर गया और यही बात फिर उसने जाकर उन काफ़िरों को भी बताई।

फिर अहाबीश के सरदार हलीस बिन अलक़मा कनानी क़ुरैश का प्रतिनिधि बनकर आया। जब रसूलुल्लाह स. ने उसको बुलन्दी से देखा तो आप स. ने फ़रमाया कि यह अमुक व्यक्ति है जो ऐसे क़बीले से सम्बन्ध रखता है जो क़ुरबानी के जानवरों आदर करते हैं और सहाबा को फ़रमाया कि इसे दिखाने के लिए क़ुरबानी के जानवरों को आगे कर दो। जब उसने यह देखा तो कहा कि सुबहानअल्लाह, इन लोगों के लिए उचित नहीं कि ये बैतुल्लाह से रोके जाएँ। कहने लगा कि अल्लाह तआला ने इस बात की अनुमति नहीं दी कि लख्म, जुज़ाम, क़नदा और हमीर नामक क़बीले तो हज करें और अब्दुल मुत्तलिब के बेटे बैतुल्लाह से रोके जाएँ। रब-ए-कअबा की क़सम, क़ुरैश नष्ट हो जाएंगे, नि:संदेह ये लोग उमरा करने के लिए ही आए हैं। ये बातें सुनकर आप स. ने फ़रमाया- अल्लाह की क़सम, ऐ बनू कनाना के भाई, बिलकुल ऐसी ही बात है। क़ुरैश ने इस पूरी बात के बयान करने पर उसे आराबी (गंवार) कह कर उसके अवलोकन को, नऊज़ुबिल्लाह आँहज़रत स. की मक्कारी कहा।

इस यात्रा में हज़रत कअब बिन उजरा के लिए कठिनाई की अवस्था में, एहराम की अवस्था में सिर मुंडवाने की अनुमति का वर्णन मिलता है। इसी तरह क़ुरैश की ओर से विभिन्न लोगों के दूत बनकर आने का भी वर्णन मिलता है, इनमें मिकरज़ बिन हफ्स भी है। जब यह आया तो रसूलुल्लाह स. ने उसे देख कर फ़रमाया कि यह एक धोकेबाज़ व्यक्ति है और रिवायतों में फ़ाजिर होने का शब्द भी मिलता है। और आप स. ने उससे भी वही बात की जो उर्वा और बदैल से की थी। फिर वह अपने साथियों की ओर लौट गया तथा उनको इन बातों की ख़बर दी जो आप स. ने उससे की थीं।

रसूलुल्लाह स. का अपने दूत के रूप में हज़रत खर्राश बिन उमय्या को क़ुरैश की ओर भेजने और उनके साथ क़ुरैश के बुरे व्यवहार तथा हत्या के प्रयास का भी वर्णन मिलता है। अतएव क़ुरैश शांति भंग होने की अवस्था का प्रयत्न करते रहे लेकिन आँहज़रत स. क्षमा फ़रमाते रहे। मक्का के क़ुरैशियों ने जोश में आकर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ी पर हमले का निश्चय किया, यहाँ तक कि आँहज़रत स. ने इन सबको क्षमा फ़रमा दिया तथा सन्धि का प्रयास जारी रखा।

अल्लामा बेहक़ी ने उर्वा से रिवायत की है कि फिर नबी करीम स. ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ी को बुलाया ताकि उन्हें क़ुरैश की ओर भेजें, तो उन्होंने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स! क़ुरैश मेरी दुश्मनी से परिचित हैं, इस लिए मुझे अपनी जान का भय है और बनू अदी में से कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो मेरी रक्षा करे। या रसूलुल्लाह स! यदि आप स. चाहते हैं तो मैं चला जाता हूँ। हज़रत उमर रज़ी ने कहा कि या रसूलुल्लाह स! मैं आप स. को ऐसे व्यक्ति का नाम बतलाता हूँ जिसका मक्का में मुझ से अधिक सम्मान है और मुझसे अधिक बड़ा परिवार है जो उसकी रक्षा करेंगे और वह आप स. के पैग़ाम को, जो आप स. चाहते, पंहुचा देंगे और वह व्यक्ति हज़रत उस्मान बिन अफ्फ़ान हैं। अतः हज़रत उस्मान रज़ी को दूत बना कर भेजा गया और उन्होंने क़ुरैश के समूह में आँहज़रत स. का पैग़ाम पेश किया, परन्तु क़ुरैश ज़िद पर अड़े रहे कि मुसलमान इस साल मक्का में दाख़िल नहीं हो सकते। क़ुरैश ने हज़रत उस्मान रज़ी को व्यक्तिगत रूप में कअबे की परिक्रमा करने का प्रस्ताव दिया लेकिन उन्होंने इंकार करते हुए कहा कि यह संभव नहीं कि रसूलुल्लाह स. तो मक्का से बहार रोके जाएँ और मैं परिक्रमा करूं। किन्तु क़ुरैश ने किसी प्रकार न माना और अंततः हज़रत उसमान रज़ी निराश होकर वापस आने की तय्यारी करने लगे।

इस अवसर पर मक्का के दुष्ट लोगों को यह शरारत सूझी कि उन्होंने संभवतः इस विचार से कि इस प्रकार हमें सन्धि करने में अधिक लाभ दायक अनुबन्ध प्राप्त हो सकेंगे, हज़रत उसमान रज़ी तथा उनके साथियों को मक्का में ही रोक लिया। इस ख़बर पर मुसलमानों में यह अफ़वाह फैल गई कि मक्का वालों ने हज़रत उसमान रज़ी. की हत्या कर दी है। यह ख़बर जब पहुंची तो आँहज़रत स. को भी घोर दुःख एवं क्रोध था। आँहज़रत ने तुरन्त समस्त मुसलमानों में घोषणा करके उन्हें एक बबूल अर्थात कीकर के वृक्ष के नीचे बुलाया और फ़रमाया कि यदि यह

सूचना सत्य है तो ख़ुदा की क़सम! हम इस जगह से उस समय तक नहीं टलेंगे जब तक कि उसमान का बदला न ले लें। फिर आप स. ने सहाबा रज़ी. से फ़रमाया कि आओ और मेरे हाथ पर हाथ रख कर जो इस्लाम में बैअत करने का नियम है, यह संकल्प करो कि तुम में से कोई व्यक्ति पीठ नहीं दिखाएगा और अपनी जान पर खेल जाएगा, किन्तु किसी हाल में भी अपनी जगह नहीं छोड़ेगा। जब बैअत हो रही थी तो आँहज़रत स. ने अपना बांया हाथ अपने दाहिने हाथ पर रख कर फ़रमाया कि यह उसमान का हाथ है, क्यूंकि यदि वह यहाँ होता तो इस पवित्र सौदे में किसी से पीछे न रहता। इसलाम के इतिहास में यह बैअत, बैअत-ए-रिज़वान के नाम से प्रसिद्ध है अर्थात वह बैअत जिसमें मुसलमानों ने ख़ुदा की सम्पूर्ण प्रसन्नता प्राप्ति का पुरस्कार प्राप्त किया। क़ुरआन शरीफ़ ने भी इस बैअत का विशेष रूप में वर्णन किया है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह बैअत अपने घटनाक्रम के साथ मिल कर एक अत्यंत महामान्य विजय थी, न केवल इस लिए कि इसने आगे आने वाली विजय गाथा का द्वार खोल दिया बल्कि इस लिए भी कि इससे इसलाम की उस प्राणों की बलि देने वाली आत्मा का जो दीने मुहम्मदी स. का एक प्रकार से केन्द्रीय बिंदु है, एक अत्यधिक प्रभावी रंग में उदय हुआ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सुलह-ए-हुदैबियः का और अधिक विवरण इंशाल्लाह आगे बयान होगा।

अंत में हुज़ूर अनवर ने दुनिया की वर्तमान स्थिति को सम्मुख रखते हुए दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया- इस समय मैं यह भी कहना चाहता हूँ, जैसा कि सब जानते हैं कि योरूप में भी हालात बड़ी तेज़ी से युद्ध की ओर जा रहे हैं। युक्रेन और रूस की जंग फैलने की आशंका बढ़ती जा रही है। यूरुप के अन्य देशों को भी धमकियां मिल रही हैं। अधिकांश बुद्धि रखने वाले तथा शांतिप्रिय लोग, लीडर इस बारे में परेशान भी हैं। अतएव दुआ करें कि अल्लाह तआला अहमदियों और शान्तिप्रिय लोगों को युद्ध के बुरे प्रभाव से सुरक्षित रखे और ये लोग युद्ध में ऐसे हथियार उपयोग में न लाएं जिनके प्रयोग से आगे आने वाली पीढियां प्रभावित होती हों। मुस्लिम देशों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला इनको भी बुद्धि और समझ दे और अल्लाह इनको हक़ पहचानने की तौफ़ीक दे, और फ़रमाया- इस बात की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि हालात जिस तरह तेज़ी के साथ बिगड़ रहे हैं, इन हालात की ओर पहले से लोगों का ध्यान है लेकिन दोबारा याद दिला दूं कि घरों में दो तीन महीने का राशन रखने की कोशिश करें। परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यही है कि अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने का प्रयास करें, उसकी रज़ा पाने की कोशिश करें, उससे सम्बन्ध पैदा करने की कोशिश करें, इसमें बढ़ने का प्रयास करें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131